तात्पर्य

जनसाधारण के लिए यह सत्य प्रायः अचिन्त्य है कि महान् प्राकृत सृष्टि किस प्रकार भगवान् के आश्रित है। अतएव इस सत्य को लोकबुद्धि में प्रवेश कराने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण आकाश का दृष्टान्त दे रहे हैं। इस सृष्टि में हमारी कल्पना-शक्ति के लिए आकाश सबसे बड़ा है। सम्पूर्ण सृष्टि आकाश पर अवलम्बित है। इस आकाश में अणु से लेकर सूर्य, चन्द्र आदि बड़े से बड़े ग्रह परिभ्रमण कर सकते हैं। महान् वायु भी आकाश में स्थित है; वह आकाश से अतीत नहीं है।

इसी प्रकार, सम्पूर्ण आश्चर्यमयी सृष्टि श्रीभगवान् के संकल्प के आधार पर स्थित है और पूर्ण रूप से उसी के आधीन है। जैसा लोकप्रसिद्ध है, भगवत्-इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। इस प्रकार सब कुछ उन्ही के संकल्प के अनुसार हो रहा है। उनके संकल्प से सारी सृष्टि होती है, सबका पालन होता है और अन्त में नाश होता है। फिर भी, वे सबसे असंग हैं, उसी भाँति जैसे गगन वायुमण्डल से सदा असंग है। उपनिषद्-वाणी है: श्रीभगवान् के भय से ही वायु विचरता है।' **गर्गोपनिषद्** में कहा है, 'श्रीभगवान् की आज्ञा की आधीनता में चन्द्र, सूर्य आदि भीमकाय ग्रह घूम कर रहे हैं।' ब्रह्मसंहिता में भी इसका उल्लेख है। वहाँ कहा गया है कि तेज और प्रकाश के विस्तार की अनन्त शक्तिवाला सूर्य श्रीभगवान् का एक चक्षु है। श्रीगोविन्द की आज्ञा और संकल्प के अनुसार वह अपनी निश्चित कक्षा में घूम रहा है। इस प्रकार, वैदिक साहित्य से प्रमाणित होता है कि अति अद्भुत एव महान् प्रतिभासित होने वाली यह प्राकृत सृष्टि पूर्ण रूप से श्रीभगवान् के नियन्त्रण में है। अगले श्लोकों में इस तथ्य का अधिक विशद वर्णन है।

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्।।७।।

सर्वभूतानि=सब प्राणी; **कौन्तेय**=हे कुन्तीपुत्र; **प्रकृतिम्**=प्रकृति में; **यान्ति** =प्रवेश करते हैं; **मामिकाम्**=मेरी; **कल्पक्षये**=कल्प का अन्त होने पर; **पुनः**= फिर; **तानि**=उन सब को; **कल्प आदौ**=कल्प के प्रारम्भ में; **विसृजामि**=रचता हूँ; **अहम्**=मैं।

अनुवाद

हे अर्जुन! कल्प का अन्त होने पर सम्पूर्ण सृष्टि मेरी प्रकृति में लय हो जाती है और नए कल्प के आरम्भ में अपनी शक्ति द्वारा मैं उसे फिर रचता हूँ।।७।।

तात्पर्य

इस प्राकृत सृष्टि का सृजन, पालन एवं संहार पूर्ण रूप से श्रीभगवान् के परम संकल्प पर निर्भर करता है। **कल्पक्षय** का अर्थ ब्रह्मा की मृत्यु से है। ब्रह्मा के जीवन की अवधि सौ वर्ष है, जिसका एक दिन पृथ्वी के ४,३०,००,००,००० वर्षों के